HISTORY (प्राचीनतम राज्य)

(The Earlier State)

• सोहल महाजनपद (The Sixteen Mahajanpadas)

इतिहासकारों ने भारत के प्राचीन इतिहास में छठी शताब्दी ई०पू० को अति महत्वपूर्ण युग कहा है। इस युग में प्राचीन राजयों में नगरों का उदय हुआ। इस काल में लोहे का अधिक प्रयोग होने लगा, तथा सिक्के बनाये जाने लगे। इसी काल में बहुत से नये धर्मों तथा संप्रदायों का उदय हुआ। परंतु इनमें केवल बौद्धमत तथा जैनमत ही अब तक जीवित है। इन धर्मों के ग्रंथों में अन्य बातों के अतिरिक्त सोहल राज्यों अथवा महाजनपदों (कबीला बस्तीयों) का वर्णन है। यद्यपि इन ग्रंथों में कौशल, मगध, वत्स, कुरू, वज्जि तथा पांचाल। ऐसा प्रतित होता है कि यह महाजनपद से अधिक शक्तिशाली थे। ये सभी राज्यों के गंगा-यमुना के घाटीयों में स्थित थे।

बहुत से जनपदों के मुखयों को राजा कहा गया है। इन जनपदों में से कई जनपदों को गण तथा कईयों को संघ कहा जाता है। परन्तु वास्तव में उन राज्यों में सत्ता थोड़े से प्रभावशाली तथा शक्तिशाली लोगों के

हाथों में केंद्रित थी जिन्हें सामूहिक रूप में राजा कहा जाता है। महावीर तथा बुद्ध दोनों का ही संबंध ऐसे गणराज्यों से था। वज्जी संघ जैसे कुछ राज्यों में राजा ही संयुक्त रूप से भूमि आदि संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं। ऐसा प्रतीत होता है की इन राज्यों में से कुछ लगभग एक हजार वर्ष तक अस्तित्व में रहे।

हमें राज्यों के इतिहास के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त नहीं है परंतु फिर भी हम छठी शताब्दी ई० पू० में भारत की राजनीति स्थिति के बारे में कुछ अनुमान लगा सकते हैं। देश में उस समय राजनीतिक एकता का अभाव था। इन सोलह राज्यों के शासक आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। इन महाजनपदों की राजनीति उपलब्धियों के बारे में बहुत कम जानकारी मिलती है परंतु इनके शासन प्रबंध के बारे में अवश्य ही कुछ पता चलता है।

प्रत्येक महाजनपद की एक राजधानी होती है इर्द-गिर्द दुर्ग बनी होती हैं। राज्यों को नगरों सेनाओं तथा उच्च अधिकारियों स्थिति पर व्यय करने के लिए संसाधनों की आवश्यकता होती थी। लगभग छठी

शताब्दी ई० पू० के पश्चात ब्राह्मणों ने संस्कृत भाषा के धर्मशास्त्रों की रचना का कार्य आरंभ कर दिया था। इन धर्मशास्त्रों में शासकों तथा अन्य सामाजिक वर्गों के लिए नियम लिखे होते थे। धर्मशास्त्रों में शासकों को कृषकों, व्यापारियों, तथा कारीगरों से कर तथा उपहार एकत्रित करने का परामर्श दिया गया है। धन एकत्रित करने के लिए सेनाएँ नहीं थी। धीरे-धीरे कुछ शक्तिशाली राज्यों ने स्थायी सेनाएँ तथा अफसरशाही की भरती कर ली। अन्य शासक अपनी आवश्यकता अनुसार किसानों में से सैनिक भर्ती कर लेते थे। यह अपेक्षा की जाती थी कि शासक क्षत्रिय वर्ण से ही होगा।

Page-3